International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

19 वीं – 20 वीं शताब्दी में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 मो0 इन्तेखाब आलम
उमरी, मधुबनी (बिहार)

सार (ABSTRACT)

उन्नीसवीं शताब्दी केवल भारत के इतिहास में ही नही, बल्कि समस्त एषिया के इतिहास में एक विषिष्ट स्थानरखती है, क्योंकि यह शताब्दी नवजागरण की शताब्दी रही है। इस शताब्दी में प्रायः सभी एषियाई देषों में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक नवजागरण हुए। भारत भी इससे अछूता नहीं रह सका। यद्यपि भारत का धार्मिक और सामाजिक जीवन कुत्सित और कुर–रिवाजों तथा प्रथाओं के दलदल में फँस गया था। उन्नीसवी शताब्दी में रेल, जहाज, वायुयान, तार, बेतार, रेडियों, पुरातन सभ्यता–संस्कृति आदि से लोगो में सम्पर्क बढ़ा। राजा–राजमोहन राय पं0 ईष्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, रामकृष्णा परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गाँधी आदि ने सामाजिक तथा धार्मिक कुरीतियों का अंत का बीड़ा उठाया और भारतीयों के सामाजिक जीवन में जान डाल दी। भारतीयों ने न तो पाष्चात्य षिक्षा अथवा उसके दर्षन को पूरी तरह अपनाया और न ही परंपरावादी अतीत को पूरी तरह से नकारा। इन आंदोलन में परम्परा और प्रगति का अदभुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है।

शब्दकुंजी (KEYWORDS)- उन्नीसवीं शताब्दी, सुधार आंदोलन सामाजिक और धार्मिक,

प्रस्तावना (INTRODUCTION)

19 वीं शताब्दी के दौरान भारत सामाजिक–धार्मिक आंदोलनों और सांस्कृतिक पुनरूद्धार के दौर से गुजरा। इस समय तक भारतीय यूरोपियों और उनके माध्यम से उनकी संस्कृति के संपर्क में आ चुके थे। भारत पर अंग्रेजो की विजय से, भारत का काफी भाग प्रत्यक्ष ब्रिटिष औपनिवेषिक शासन के अंतर्गत आ गया। इससे यह संपर्क और दृढ़ हो गया। इसके अतिरिक्त भारत में अंग्रेजी षिक्षा के प्रवेष ने भी पष्चिमी विज्ञान, दर्षन, साहित्य ओर चितंन से भारतीयाके का परिचय कराया इसने उन बंधनों को तोड़ दिया जिन्होने पष्चिमी दुनिया के दरवाजे भारत के लिए बंद किए हुए थे। विदेषी विद्वानों ने हिन्दुओ के अनेक धार्मिक ग्रंथो मुख्यतः वेद और उपनिषदों का अध्ययन किया और कहा कि यह संसार की संस्कृति की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अमूल्य सम्पत्ति है इनकी तुलना संसार का कोई भी धार्मिक ग्रंथ नही कर सकता। उससे भारतीयों में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति विष्वास उत्पन्न हुआ। और अपनी संस्कृति की श्रेष्ठता को स्थापित करने का प्रयत्न किया।

ईसाई मिषनरियों की गतिविधियों विषेषरूप से षिक्षा और धर्म प्रचार ने भी ईसाई धर्म के आंतरिक सिद्धांतो की ओर बहुत से भारतीयों को आकर्षित किया। इससे भारतीय लोगो का जीवन और चितंन धीरे–धीरे पष्चिमी संस्कृति और विचारो से प्रभावित हुआ। इनका सर्वाधिक प्रभाव प्रचलित भारतीय परंपराओं, विष्वासों और रिवाजो में देखा जा सकता है। उन्नीसवी शताब्दी में रेल, तार, डाक, बेतार, वायुयान, रेडियों आदि ने लोगो के बीच संपर्क बढ़ाया अनेक प्रवद्ध हिंदुओ ने यह जान लिया कि हिंदू और ईसाई धर्म बाहरी रूपों में एक–दूसरे से भिन्न होते हुए भी आंतरिक मूल्यों में एक जैसे है। इस प्रकार अपने धर्म और सदियों पुरानी संस्कृति की महान परंपराओं को छोड़े बिना उन्होने अपने समाज की अंधविष्वासो से मुक्त कराने के विषय में गंभीरता से विचार किया।

19 वीं शताब्दी के सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन के अग्रदूत राजा राममोहन राय थे। राममोहन राय मनुष्यों के सार्वभौम भ्रातृत्व और ईष्वर की मूलभूत एकता में विष्वास करते थे। इसके अतिरिक्त वे अपने देषवासियों को दोषपूर्ण स्वप्न से जगाकर, उन्हें अपने धर्मग्रंथों की महन्ता से परिचित कराना चाहते थे। सतीप्रथा के साथ ही साथ राममोहन राय ने स्त्रियों को पृथक रखने, बहुपत्नि प्रथा और जाति व्यवस्था की बुराइयों के विरूद्ध भी आवाज उठाई। उनके विचार में जाति प्रथा ''हमारे बीच एकता और देषभक्ति के अभाव का स्त्रोत'' थी। रचनात्मक पक्ष मे उन्होने स्त्रियों की षिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और छूआ–छूत के उन्मूलन की वकालत की। साथ ही उन्होने सरकार से भारत को यूरोपीय षिक्षा का लाभ दिलवाने का निवेदन किया। षिक्षण की एक अधिक उदार और प्रबुद्ध व्यवस्था के लिए उनके तर्कों ने विषेष रूप से बैंटिक को अंग्रेजी षिक्षा के पक्ष मे निर्णय देने के लिए प्रोत्साहित किया।

19 वीं शताब्दी के पूर्वाद्र्ध में जिस अन्य आंदोलन ने बंगाल का षिक्षित युवाओ के विचारो को उत्तेजित किया। वह यंग बंगाल मूवमेटं था। यह आंदोलन हेनरी लुई विवियन डेरोजियो(1809–1831)के विलक्षण व्यक्तित्व से प्रेरित था। उन्होने छात्राओं को सामाजिक, धार्मिक अथवा नैतिक क्षेत्रो में सत्य की खोज के लिए प्रोत्साहित किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

एम0 जी0 रानाडे ने विषेष रूप से एक शुद्धधीकरण आंदोलन चलाया जिसके अंतर्गत मद्यत्याग और नाचविरोधी अभियान अन्य व्यक्तियों का हिन्दू धर्म में प्रवेष और विवाह खर्च में कटौती शामिल थे। गोपाल कृष्ण गोखले ने 1905 में सर्वेंटस ऑफ इंडिया सोसाइटी की स्थापना की। इस सोसाइटी ने शैक्षिक और सामाजिक सुधारो के प्रवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्यषोध्क समाज ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित किया गया था। जिन्होने महाराष्ट्र में महिलाओ और दलितों के मुद्दो को बड़ी गंभीरता से लिया। उन्होने विधवाओं की ओर ध्यान दिया और उन्हे पुनर्विवाह करने के लिए सहायता दी।

1875 में स्वामी दयानंद ने बंबई में औपचारिक रूप से आर्य समाज की पहली इकाई की स्थापना की। तीन वर्ष बाद लाहौर मे इसके मुख्यालय की स्थापना की गई। आर्य समाज के तीन प्रमुख उद्देष्य थे। प्रथम, यह वेदो के मूल विचार को पुनर्जीवित करना चाहता था, द्वितीय, यह समकालीन भारतीयों को देष के वैदिक अतीत के गौरवमय आदर्षो से प्रेरित करना चाहता था। तृतीय, यह ईसाई मिषनरियों के अतिक्रमण के विरूद्ध भारत के लोगो को अपनी संस्कृति के आधार पर संगठित करना चाहता था।

स्वामी विवेकानंद पहले भारतीय थे, जिन्होने विष्ववयापी स्तर पर वेदांत दर्षन के आध्यात्मिक गौरव को पुर्नस्थापित किया। लेकिन उनका उद्देष्य केवल धर्म की व्याख्या करना नहीं था अपने देषवासियों की निर्धनता और दुर्दषा से उन्हें अतिषय दुख हुआ। उनका दृढ़ विष्वास था कि कोई भी सुधार तभी सफल हो सकता था जबकि जनसमूह की दषा उन्नत की जाए। श्रीमती एनी बेसेंट के नेतृत्व में भारत में थियोसोफिकल आंदोलन पष्चिमी ज्ञानोदय के दर्षन से प्रेरित था। सामाजिक पक्ष मे भी सोसाइटी के योगदान काफी महत्वपूर्ण थे। इसने बाल–विवाह का विरोध किया। जातिप्रथा को समाप्त करने की वकालत की तथा जाति बहिष्कृत और विधवाओं की दषा में सुधार के लिए कार्य किए।

सर सैयद अहमद का प्रयास मुस्लिम समाज में आई सामाजिक बुराईयों और अंधविष्वासों को समाप्त करना था। अतः उन्होने बहुपत्नी प्रथा, भाग्यवादिता और कुरीतियो की निंदा की। उन्होने तहजीब–उल–अखलाक (नीति संबंधी सुधार) नामक एक मासिक सावधिक पत्रिका आंरभ की जिसका उद्देष्य मुस्लिम जनसमुदाय में आत्मसम्मान और प्रियाषीलता का भाव जगाना था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सर सैयद अहमद का विष्वास था कि भारतीय मुसलमानों को पष्चिमी विचारधारा के अनुरूप ढलने का प्रयास करना चाहिए। इसके दो उपलक्षण थे– प्रथम राजनीतिक और दूसरा सांस्कृतिक। उन्हें एक आंषका थी कि यदि भारतीय मुसलमान अपने को राजनीतिक रूप से भारत में ब्रिटिष शासन के अनुकूल नहीं बनाएँगे तो वे सरकारी समर्थन की दौड़ में हिन्दुओं से काफी पीछे रह जाएँगें। अलीगढ़ आंदोलन षिक्षा और ज्ञानोदय में सहायता दी तथा उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार किया।

1851 में षिक्षित पारसियों के एक वर्ग द्वारा रहनुमाई मजदायासन सभा (धार्मिक सुधार संघ) की स्थापना की गई। इसका उद्देष्य पारसियों की सामाजिक स्थिति को पुनर्जीवित और पारसी धर्म की पुरातन शुद्धता का पुर्नस्थापना करना था। इस संस्था के प्रमुख व्यक्तियों में एक दादाभाई नौरोजी थे, जिन्होने भारत के राजनीतिक पुनरूदृधार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

भ्रष्ट मंहतो से छूटकारा पाने और गुरूद्वारो में सुधार हेतु षिरोमणि गुरूद्वारा प्रबंधक समिति की स्थापना हुई। इसके अतिरिक्त सिक्ख जीवन को शुद्ध करने और समुदाय को मजबूत बनाने के लिए प्रमुख खालसा दीवान का केन्द्रीय संघ के रूप में सृजन किया गया जबकि स्थानीय स्तरो पर सिंह सभाओं की स्थापना की गई। 1890 में अमृतसर मे खालसा कॉलेज से भी सुधार आंदोलन को प्रोत्साहन मिला।

अन्य समुदायों की भाँति जैन समुदाय और भारतीय ईसाईयों ने भी आंतरिक सुधारो के लिए प्रयास किया। अपने धर्म के मूल तत्व पर पुनः बल देने के लिए जैन धर्मावलंबियों ने भारत जैन महामंडल बनाया। इसी प्रकार विवेकषील ईसाई मिषनरियों और दूरदर्षी धार्मिक आधिकारियों ने भारतीय ईसाईयों की विविध धार्मिक विधियों में अंतर को कम करने और उन्हें देषव्यापी सषक्त संगठन के रूप में एक करने का प्रयास किया।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में भारतीय समाज में सामाजिक–सांस्कृतिक धार्मिक सुधारों को राजनैतिक आजादी की लड़ाई का महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया गया था। छूआ–छूत का निषेध, सम्पत्ति के दिखावे और फिजूलखर्ची का विरोध, सार्वजनिक सफाई लोगो को षिक्षित करना, धार्मिक रूदिवादिता का विरोध और सर्वधर्मसभाव, ये सब आजादी के आंदोलन के महत्वपूर्ण हिस्से थे, इन कार्यक्रमों की भारत की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आजादी के आंदोलन से जोड़ने का एक नतीजा यह हुआ कि यह सब भारतीय सार्वजनिक जीवन की मुख्य धारा में शामिल हो गए।

महत्व एवं विचार–विमर्श

19 वीं शताब्दी में हुए प्रायः सभी सामाजिक और धार्मिक आंदोलन के क्रियाकलापों को ध्यान से देखने पर निम्न महत्व दृष्टिगोचर होते है।

प्रथम :–प्रायः सभी सुधारको ने अपने चिंतन में मानव की तर्कबुद्धि, विवेक और स्वतंत्र विचारों पर बल दिया। अतः तर्कवाद तथा वैज्ञानिकता और मानवीय दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला।

साथ ही पष्चिमी के अंधानुकरण को रोका गया और इसके लिए सभी ने षिक्षा के महत्व को समझा। सभी संस्थाओ द्वारा अपने–अपने प्रभाव क्षेत्र में स्कूल और कॉलेज खोले गए। सभी ने नारी षिक्षा पर बल दिया।

दुसरा :–सभी सुधारको ने जाति प्रथा की जटिलता और छूआ–छूत पर करारे प्रहार किए। कुछ आंदोलनों का मुख्य मुद्दा ही ये बन गए। इस आधार पर सभी ने समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व की भावना पर बल दिया और समाज में एकता की दिषा निर्धारित कि।

तीसरा :–सभी ने सामाजिक कुरीतियों पर कटु प्रहार किए, विषेषकर विवाह संबंधी सुधारों के लिए आंदोलन हुए।

चौथा :–सभी ने धार्मिक दृष्टि से रूढ़िबादिता, अंधविष्वास, पाखंडो और कुप्रथाओं को छोड़ने पर बल दियाा।

पाँचवाँ :– सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों ने आगामी राष्ट्रीय आंदोलन की भूमिका तैयार की। समाज मे व्यापक और देषव्यापी दृष्टिकोण जागृत किया। इन आंदोलनो ने आत्मविष्वास, आत्मसम्मान और देषभक्ति की भावना बढ़ी। राष्ट्रीय चेतना आई।

छठा :–पुनर्जागरण से भारत का आधुनिकीकरण हुआ क्योंकि पुनर्जागरण के मूल में बुद्धिवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं तर्क जो हर जगह आधुनिकता के वाहक रहे है।

सातवाँ :–सुधार आंदोलनो ने धार्मिक एवं सामाजिक अंधविष्वास, रूदिवादिता और क्रूर अमानवीय प्रथाओं का विरोध किया। सामाजिक समानता और विषेषकर महिलाओं की स्वतंत्रता का समर्थन किया।

आठवाँ :–षिक्षा के माध्यम से आधुनिक ज्ञान, विचार एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जनमानस में प्रतिष्ठित करने की कोषिष की।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नौवाँ :–पुनर्जागरण से राष्ट्रवाद का उदय हुआ लोग सांस्कृतिक एवं धार्मिक रूप से जुड़ने लगे।

दसवाँ :– पुनर्जागरण ने आधुनिकरण को जन्म दिया। और वे मध्यकाल से बाहर आये।

नकारात्मक दृष्टि से इस आंदोलन ने परस्पर प्रतियोगिकता, स्पर्धा और कटुता को भी बढ़ावा दिया। इससे विभिन्न संप्रदायों में परस्पर तनाव उत्पन्न हुए। जिसका लाभ उठाकर ब्रिटिष शासको ने बीसवीं सदी में परस्पर विभेद की नीति को भरपूर आगे बढ़ाया। धर्म सुधार आंदोलनो मे केवल धार्मिक एवं दार्षनिक पक्षों पर जोर दिया, संस्कृति के अन्य पक्ष जैसे–कला, स्थापत्य, साहित्य, संगीत, विज्ञान, तकनीकी इत्यादि पर विषेष जोर नहीं दिया गया। कुछ हद तक इसने मनुष्य के विवेक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण की जड़ों को भी खोदा। भारतीय पुनर्जागरण ऐतिहासिक दृष्टि से ही नही बल्कि सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भी हानिकारक साबित हुआ। क्योंकि यह दो राष्ट्र के सिद्धांत को जन्म देने वाले तत्वो में से एक तत्व था।

इस आंदोलन के परिणामस्वरूप देष में अंग्रेजी षिक्षा एवं पष्चिमी विचारो का प्रसार रहन–सहन कीी नकल शुरू हुई। भारत में आधुनिकता अंग्रेजी षिक्षा से नहीं बल्कि संस्कृत या षिक्षा के माध्यम से आ सकती थी ओर यहाँ के ज्ञान–विज्ञान को यहाँ के परंपरागत ज्ञान–विज्ञान जैसे–आयुर्वेद गणित, ज्योतिष, खगोल विज्ञान आदि के अध्ययन एवं विकास के जरिए आधुनिक बनाया जा सकता था।

सुधार आंदोलन का आम लोगो से बहुत ही कम सबंध था। तब सबसे बड़ी समस्या एक ब्रह्मा की उपासना, सतीप्रथा या बाल हत्या नहीं बल्कि आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से शोषित जनता थी। इसका प्रभाव केवल कुछ शहरी, मध्य एवं उच्च वर्ग की जनता पर ही पड़ा।

इससे यह तो नही हुआ कि सारी बुराइयाँ समाज से खत्म हो गई लेकिन उन्हे बुराई की तरह देखा गया जैसे–जाति के आधार पर भेदभाव खत्म नही हुआ, न ही सांप्रदायिकता खत्म हुई लेकिन व्यापक समाज में इन्हें बुराइयों की तरह देखा गया और इनका आचरण करने वाले भी कुछ हद तक नजर की शर्म से बचकर यह सब करते थे।

निष्कर्ष :– यह सोचना नितांत गलत होगा कि इन आंदोलनो ने भारतीय समाज और चिंतन को पूर्णतः बदल डाला। वस्तुतः ये धार्मिक और सामाजिक आंदोलन पुरातन और नवीनता, प्राचीन आस्था और नव बुद्धिवाद परम्परा और आधुनिकता, अध्यात्मवाद और भौतिकवाद राष्ट्रीयता और सांप्रदायिकता के विचारो से ओत प्रोत थे। भारतीयों ने न तो पाष्चात्य षिक्षा अथवा उसके दर्षन को पूरी

तरह अपनाया और न ही परंपरावादी अतीत को पूरी तरह से नकारा। सभी आंदोलनो मे पंरम्परा और प्रगति का अदभुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। ये सभी आंदोलन प्रायः मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग की उपज थी जो शैन–शैन देष के सभी वर्गो तक पहुँचने का प्रयास कर रहे थे। इस आंदोलनो ने राष्ट्रीयता की जड़ो को सींचा। जिसका पौधा बीसवी शताब्दी में अंकुरित पुष्पित और पल्लवित हुआ। इन आंदोलनो ने देष की नई पीढ़ी को देष के नेतृत्व के लिए तैयार किया।

संदर्भग्रंथ

1. Sharma, K. L. : caste, class and Social Movement
2. Kothari, Rajani : caste in Indian Politics
3. Sarkar Sumit : Bibiliographices Survey of social Reform Movements in the 18th and 19th Centuries (ICHR 1975)
4. Teach yourself History : History of India (AD 1757-1950) BHARATI BHAWAN (P&D)
5. भारत और विष्व : कक्षा 8 के लिए सामाजिक विज्ञान की पाठयपुस्तक ¼NCERT:नई दिल्ली ½प्रथम संस्करण, ekpZ&2004
6. https://satyagarh.scroll.in